आचार्य छत्तीसी विधान

प्रशममूर्ति आचार्य
श्री शांतिसागर जी महाराज (छाणी)

-: मंगल आशीर्वाद :-

समाधिस्थ परम पूज्य आचार्य 108
श्री विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज
एवं
समाधिस्थ परम पूज्य सराकोद्धारक षष्टम पट्टाचार्य
108 श्री ज्ञान सागर जी मुनिराज

-: रचयित्री :-

परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव,
गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माताजी

-: प्रकाशक :-
श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि॰)

कृति : **आचार्य छत्तीसी विधान**

कृतिकार : **गणिनी आर्यिका श्री 105 स्वस्ति भूषण माता जी**

प्रथम संस्करण : **2100 प्रतियाँ**

प्रकाशन वर्ष : **2025**

न्यौछावर राशि : **20.00 मात्र (साहित्य सृजन हेतु)**

प्राप्ति स्थान :

1. **राकेश जैन, महामंत्री-श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)**
   दूरभाष : 9650946696
2. **उमेश जैन, मंत्री-श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)**
   दूरभाष : 7982630514
3. **श्री जैन साहित्य सदन, लाल मन्दिर, चाँदनी चौक, दिल्ली**
   दूरभाष : 09311168299, 011-23253638
4. **श्री सोनागिर सिद्ध तीर्थ क्षेत्र, दतिया (मध्य प्रदेश)**
   दूरभाष : 9425726867
5. **श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्तिधाम**
   शाहपुरा रोड़, जहाजपुर, जिला भीलवाड़ा, राजस्थान
   दूरभाष : 8824620107

Website - www.munisuvratswastidham.com
Instagram - munisuvrat_swastidham
Facebook - munisuvratswastidham
Youtube - swastidhamjahazpur

मुद्रक : दिपिशा एंटरप्राइज (दिल्ली) मो. 9210488047

प्रशममूर्ति आचार्य शांतिसागर प्रथम 'छाणी' और उनकी आचार्य परम्परा

बाल ब्रह्मचारी, प्रशममूर्ति आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज प्रथम 'छाणी' (उत्तर)

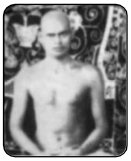

जन्म तिथि — कार्तिक वदी एकादशी, वि.सं. 1945 (31 अक्टूबर 1888)
जन्म स्थान — छाणी, जिला - उदयपुर (राजस्थान)
जन्म नाम — श्री केवलदास जैन
पिता का नाम — श्री भागचन्द जैन
माता का नाम — श्रीमती माणिक बाई
क्षुल्लक दीक्षा — सन् 1922 (वि.सं. 1979), गढ़ी, जिला-बाँसवाड़ा (राजस्थान)
मुनि दीक्षा — सन् 1923 (वि.सं. 1980), सागवाड़ा, जिला-डूंगरपुर (राजस्थान)
आचार्य पद — सन् 1926 (वि.सं. 1983), गिरिडीह (झारखंड)
समाधिमरण — 17 मई, 1944 (वि.सं. 2001), सागवाड़ा (राजस्थान)

परम पूज्य आचार्य 108 श्री सूर्यसागर जी महाराज (प्रथम पट्टाचार्य)

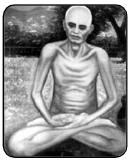

जन्म तिथि — कार्तिक शुक्ल नवमी, वि.सं.1940(8 नवम्बर सन् 1883)
जन्म स्थान — प्रेमसर, जिला - ग्वालियर (म.प्र.)
जन्म नाम — श्री हजारीमल पारेवाल जैन
पिता का नाम — श्री हीरालाल जैन
माता का नाम — श्रीमती गेदा बाई
ऐलक दीक्षा — सन् 1924 (वि.सं. 1981), इन्दौर (मध्य प्रदेश)
मुनि दीक्षा — सन् 1924 (वि.सं. 1981), देवास (म.प्र.)
आचार्य पद — सन् 1928 (वि.सं. 1985), कोडरमा (झारखंड)
समाधिमरण — सन् 1952 (वि.सं. 2009), डालमिया नगर (झारखंड)

परम पूज्य आचार्य 108 श्री विजयसागर जी महाराज (द्वितीय पट्टाचार्य)

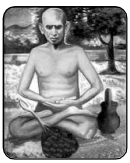

जन्म तिथि — माघ सुदी अष्टमी, वि.सं. 1938 (सन् 1881)
जन्म स्थान — सिरोली, जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम — श्री चोखेलाल जैन
पिता का नाम — श्री मानिक चन्द जैन
माता का नाम — श्रीमती लक्ष्मी बाई
क्षुल्लक दीक्षा — इटावा (उत्तर प्रदेश)
ऐलक दीक्षा — मथुरा (उत्तर प्रदेश)
मुनि दीक्षा — नागौर, राजस्थान (आचार्य श्री सूर्यसागर जी से)
आचार्य पद — लश्कर, ग्वालियर (म.प्र.)
समाधिमरण — सन् 1962 (वि.सं. 2019), ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

पूरज पूज्य आचार्य 108 श्री विमलसागर जी महाराज 'भिण्ड' (तृतीय पट्टाचार्य)

जन्म तिथि — पौष शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 1948 (सन् 1892)
जन्म स्थान — मोहिना,जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम — श्री किशोरीलाल जैन
पिता का नाम — श्री भीकमचन्द जैन
माता का नाम — श्रीमती मथुरा देवी
क्षुल्लक दीक्षा — सन् 1941 (वि.सं. 1998), झालरापाटन (राजस्थान)
मुनि दीक्षा — सन् 1943 (वि.सं. 2000), कोटा (राजस्थान)
आचार्य पद — सन् 1973 (वि.सं. 2030), हाड़ोती (राजस्थान)
समाधिमरण — सन् 1973 (वि.सं. 2030), सांगोद (राजस्थान)

मासोपवासी, समाधि सम्राट परम पूज्य आचार्य 108 श्री सुमतिसागर जी महाराज (चतुर्थ पट्टाचार्य)

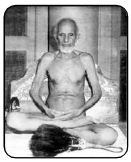

जन्म तिथि	–	आसोज शुक्ल चतुर्थी, वि.सं. 1974 (22 अक्टूबर, 1917)
जन्म स्थान	–	श्यामपुर, जिला - मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम	–	श्री नत्थीलाल जैन
पिता का नाम	–	श्री छिद्दूमल जैन
माता का नाम	–	श्रीमती चिरौंजी देवी
ऐलक दीक्षा	–	सन् 1968 (वि.सं. 2025), रेवाड़ी (हरियाणा)
ऐलक दीक्ष गुरू	–	आचार्य विमलसागर जी महाराज
ऐलक नाम	–	श्री वीरसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा	–	सन् 1968 (वि.सं. 2025), गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)
आचार्य पद	–	सन् 1973 (वि.सं. 2030), मुरैना (म.प्र.) (आचार्य श्री विमलसागर जी 'भिंड' महाराज से)
समाधिमरण	–	सन् 1994 (वि.सं. 2051), सोनागिरि सिद्धक्षेत्र (म.प्र.)

परम पूज्य आचार्य 108 श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर जी महाराज (पंचम पट्टाचार्य)

जन्म तिथि	–	अगहन वदी पंचमी, वि.सं. 2006 (10 नवम्बर 1949)
जन्म स्थान	–	बरवाई, जिला - मुरैना (म.प्र.)
जन्म नाम	–	श्री सुरेश चन्द जैन
पिता का नाम	–	श्रीमंत सेठ श्री बाबूलाल जैन
माता का नाम	–	श्रीमती सरोज देवी
क्षुल्लक दीक्षा	–	सन् 1972 (वि.सं. 2029)
मुनि दीक्षा	–	सन् 1988 (वि.सं. 2045), सोनागिरी सिद्धक्षेत्र
मुनि दीक्षोपरान्त नाम	–	मुनि श्री 108 सन्मतिसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू	–	आचार्य श्री सुमतिसागर जी महाराज
आचार्य पद	–	सन् 1989 (वि.सं. 2046), नरवर नगर (म.प्र.)
समाधिमरण	–	सन् 2013 (वि.सं. 2070), दिल्ली

सराकोद्धारक परम पूज्य आचार्य 108 श्री ज्ञानसागर जी महाराज (षष्टम पट्टाचार्य)

जन्म तिथि	–	वैशाख शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 2014 (1 मई, 1957)
जन्म स्थान	–	मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम	–	श्री उमेश कुमार जैन
पिता का नाम	–	श्री शांतिलाल जैन
माता का नाम	–	श्रीमती अशर्फी देवी
ब्रह्मचर्य व्रत	–	सन् 1974 (वि.सं. 2031)
क्षुल्लक दीक्षा	–	सन् 1976 (वि.सं. 2033), सोनागिरि स्द्धिक्षेत्र
क्षु. दीक्षा गुरू	–	आचार्य श्री सुमति सागर जी महाराज
क्षु. दीक्षोपरान्त नाम	–	क्षुल्लक 105 श्री गुणसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा	–	सन् 1988 (वि.सं. 2045), सोनागिरि सिद्धक्षेत्र
मुनि दीक्षोपरान्त नाम	–	मुनि श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू	–	आचार्य श्रीसुमतिसागर जी महाराज
उपाध्याय पद	–	सन् 1989 (वि.सं. 2046), सरधना (मेरठ)
आचार्य पद	–	सन् 2013 (वि.सं. 2070), बड़ागाँव (बागपत)

परम पूज्य गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्तिभूषण माता जी

जन्म तिथि	–	1-11-1969
जन्म स्थान	–	सिवनी, जिला-छिंदवाड़ा, (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम	–	संगीता (गुड़िया)
पिता का नाम	–	श्री मोती लाल जैन वर्तमान में (क्षु. श्री 105 परिणामसागर जी महाराज)
माता का नाम	–	श्रीमती पुष्पा रानी जैन वर्तमान में (क्षु. श्री 105 अर्हत मती माताजी)
लौकिक शिक्षा	–	एम. ए. (संस्कृत)
दीक्षा गुरू	–	आ. श्री 108 विद्याभूषण सन्मतिसागर जी महाराज
दीक्षा तिथि व स्थान	–	24 जनवरी 1996 (इटावा)
दीक्षा नाम	–	आर्यिका 105 स्वस्ति भूषण

आचार्य छत्तीसी विधान माण्डला

प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज (छाणी)

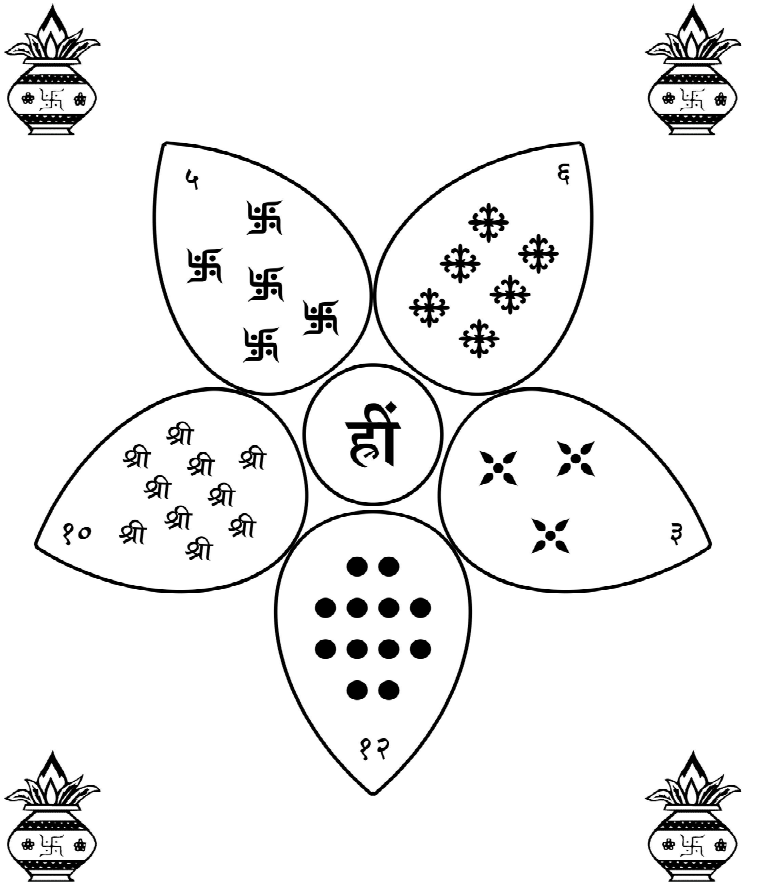

प्रशममूर्ति, दिगम्बर जैनाचार्य
श्री 108 शांतिसागर जी महाराज (छाणी)

शास्त्रों को पढ़कर, शास्त्रों को जीने वाले

प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज (छाणी)

- आर्यिका स्वस्ति भूषण

भारत वसुंधरा को रत्न गर्भा नाम से भी पुकारा जाता है। रत्न को गर्भ में धारण करने वाली। रत्न हीरा मोती नहीं बल्कि आचार्य शान्ति सागर जी छाणी जैसे रत्न को धारण करने वाली वसुंधरा। जब-जब धर्म का दीपक मद्धिम हुआ है तब-तब इस राजस्थान की वसुंधरा में कोई न कोई शूरवीर हुआ है।

राजस्थान भारत उदयपुर जिले के छाणी ग्राम में भागचंद जी पिता, मां मणिक बाई के कुक्षी से केवलदास का जन्म हुआ। बचपन से ही ध र्म में रुचि थी। पशुओं को स्वयं नहीं मारना एवं मित्र आदि को भी नहीं मारने की प्रेरणा करना। मंदिर पूजा स्वाध्याय की रुचि बचपन से थी।

जो बिन कारण वैरागी, वो पूर्व जन्म का त्यागी,
जो पर को समझाता है, वो स्वयं समझ सकता है,
संसार में रहकर प्राणी, संसार को तज सकता है।

स्वाध्याय की महत्ता आचार्य शांतिसागर जी छाणी की जीवन गाथा पढ़कर और ज्यादा ज्ञात हुई। नेमिनाथ पुराण सुनकर वैराग्य हुआ, और शास्त्र में पढ़ने से उपवास करने की प्रेरणा पाकर उपवास आदि करना प्रारम्भ किये। क्योंकि उस समय मुनि दर्शन का अभाव था। गुरु न होने के कारण शास्त्रों से पढ़कर श्रावक चर्या का पालन किया एवं प्रभु के समक्ष ब्रह्मचर्य व्रत, ब्रह्मचर्य प्रतिमा, गृहस्थ का त्याग, क्षुल्लक दीक्षा एवं मुनि दीक्षा ग्रहण की।

जहाँ कोई त्यागी गुरु प्रेरक ना हो वहाँ अंतः प्रेरणा कितनी बलवान होगी, कितना साहस और व्रतों के प्रति दृढ़ता होगी, जो इतना बड़ा कार्य स्वयं से किया। जहाँ चारों तरफ केवल गृहस्थ ही हो वहाँ स्वयं को दीक्षित करना और दृढ़ता से उस चर्या को पालन करना साक्षात् तीर्थंकर बनने जैसे

लक्षण है। अभी ना बन पाये पर आगे निश्चित ही आप तीर्थंकर की श्रेणी में आयेंगे।

अपने जीवन में सैकड़ों उपवास करने वाले तपस्वी महान संत का 31 अक्टूबर को 138 वीं जन्म जयंती, भव्य रूप से महापूजा करके मनाई जायेगी एवं 2026 में आचार्य पद के 100 वर्ष पूर्ण होने जा रहे है। 100 वाँ आचार्य पदारोहण शताब्दी महोत्सव भी एक वर्ष तक मनाया जायेगा, जिसमें भक्त अनेक तरह से गुरु चरणों में भक्ति अर्पित करेंगे और हम सभी का कर्तव्य है कि जिन गुरु के द्वारा 100 वर्षों से वीर की परम्परा वृद्धिगत हुई, भगवान महावीर की परम्परा का ध्वज लहराया ऐसे गुरु चरणों में भक्ति समर्पित अवश्य करें।

मन वचन काय कृत कारित अनुमोदना के साथ उनकी भक्ति करें। उन जैसा बनने उस पथ पर चले।

महापूजा आयोजन

बागड़ क्षेत्र में जिनधर्म की प्रभावना बहुत अच्छी है। भक्ति और श्रद्धा के अनेक उदाहरण वहाँ सहज मिल जाते है। इस महापूजा में बागड़ से 1038 भक्तों के द्वारा अर्घ्य समर्पित किये जायेंगे। यह आयोजन स्वस्ति धाम परिसर में अतिशयकारी मुनिसुव्रतनाथ प्रभु की छत्र छाया में होगा।

तेजोमयि व्यक्तित्व की धनी आर्यिकारत्न श्री स्वस्तिभूषण माताजी

-डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत
(अध्यक्ष-अ.भा. शास्त्री परिषद्)

यों तो आर्यिकाओं और साध्वियों का बहुत बड़ा समुदाय भारत वसुंधरा पर जिनधर्म की प्रभावना कर रहा है। उनमें विलक्षण प्रज्ञा और प्रतिभा को धारण करने वाली आर्यिका माताओं का विशिष्ट स्थान है। उन्हीं प्रज्ञा और प्रतिभाशीला आर्यिकाओं में गणिनी आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण माताजी का व्यक्तित्व प्रभावपूर्ण और आकर्षक है। इनके जीवन में सरलता, विद्वत्ता, श्रद्धा और विवेक का अनूठा संयोग है। वह मधुर भाषिणी, शांतचेता और सदा प्रसन्न रहने वाली आर्यिका हैं। सदा स्वाध्याय, ध्यान, चिंतन, मनन अध्ययन - अध्यापन में लीन रहती हैं। मैत्री, करुणा, प्रमोद, माध्यस्थ भाव आपके जीवन के कण - कण में समाए हुए हैं। यही कारण है कि आपके जीवन में कटुता और क्रोध कषाय आदि का अभाव है। आप प्रत्येक व्यक्ति में गुण अवलोकन करती हैं और नीरस जीवन में भी सरसता के सम दर्शन करती हैं। आपके पीयूषवर्णी प्रवचनों ने लोगों में आस्था के दीप प्रज्वलित किए हैं। समाज के व्यक्तियों में अंधविश्वास, अंधपरम्परा, रूढ़िवाद, जातिवाद, स्वार्थ, अंधता, ऊंच-नीच विषयक विषमता आदि दुर्गुणों को हटाने में आपकी अहम भूमिका है। नैतिक उत्थान के लिए आप अहर्निश प्रयत्न करती रहती हैं।

आपने दीक्षा धारण करने के बाद भी शिक्षा निरंतर ग्रहण की है, क्योंकि दीक्षा के साथ शिक्षा भी आवश्यक है। बिना शिक्षा के दीक्षा में कोई चमत्कृति पैदा नहीं होती है। ज्ञानाराधना से साधक जीवन में निखार आता है, जो आपश्री के जीवन में आया। ज्ञानाराधन करते हुए आपने शताधिक ग्रंथों का लेखन किया है। भक्ति साहित्य में तो नई चेतना ही लाई है। बहुत विधान और पूजाओं का लेखन कर लाखों लाखों व्यक्तियों को जिनेन्द्र भक्ति में जोड़ा है। समवशरण विधान, सर्वतोभद्र विधान, सिद्धचक्रविधान, कल्पद्रुम विधान आदि महाविधानों के माध्यम से समाज को भक्ति आयोजन

करने-कराने की प्रेरणा दी है। वहीं एक दिवसीय विधानों के माध्यम से भक्ति सरोवर में अवगाहन कराया है। आपकी लेखनी लोकप्रिय है। आप निरंतर सरल, सरस, सुबोध लेखन करती हैं। काव्य क्षेत्र में 'बड़ा ही महत्व है' इस काव्य के माध्यम से तो जन-जन को लुभाने का कार्य किया है। सभी लोगों में माताजी द्वारा बोला और लिखा जाने वाला 'बड़ा ही महत्व है' बड़ा ही प्रिय है। लेखन शैली जितनी प्रभावक है, उतनी ही प्रभावक आपकी प्रवचन शैली है। प्रवचन करते हुए जब आपकी वाणी रूपी सरिता कल-कल छल-छल कर प्रवाहित होती है तो श्रोता गण आनंद से झूम उठते हैं। आपके प्रवचनों में अंत:करण से निकले हुए उद्‌गार बहुत ही स्फूर्त सहज और स्वाभाविक होते हैं।

आपके जीवन की अनेक विशेषताएं हैं। अलौकिक शिक्षा में विशेष सम्मान प्राप्त कर धार्मिक शिक्षा की गहराइयों में पहुंची, आध्यात्मिक क्षेत्र में बहुमान को प्राप्त किया। अपने गुरु सिंहरथ प्रवर्तक आचार्य श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर महाराज की अनुकृति बनकर उन जैसे ही शताधिक रचनाएं कर गौरव बढ़ाया और लोकोत्तर रचना त्रिलोक तीर्थ के समान देवाधिदेव श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर की मनोहर चमत्कारी प्रतिमा को विराजित कर जहाजपुर में जहाजाकृति जैन मंदिर का निर्माण कराया जहाजपुर अतिशय क्षेत्र को त्रिलोक तीर्थ जैसी प्रसिद्धि प्राप्त कराने वाली आर्यिकाश्री स्वस्तिभूषण अपने आप में महान तेजोमयी व्यक्तित्व हैं। आपने अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा में चौबीसी निर्माण, सिद्ध क्षेत्र सोनागिरि में सहस्रकूट जिनालय, झालरापाटन पाटन का जीर्णोद्धार, मुरैना में गुरुकुल, डोला जी अतिशय क्षेत्र का जीर्णोद्धार आपके निर्देशन में सम्पन्न हो रहा है एवं केशवराय पाटन प्राचीन तीर्थ का संपूर्ण नवीनीकरण भी आपके निर्देशन में हो रहा हैं।

इनके जीवन में सूर्य की तेजस्विता, चंद्रमा की शीतलता, सागर की गंभीरता, पृथ्वी की सहिष्णुता, कमल की निर्लिप्तता आकाश की शुभता है। जीवन में सद्‌गुणों का साम्राज्य है। आपकी आकृति में नम्रता है, प्रकृति में सहजता है और सेवा में नि:स्वार्थता है। ज्ञान की गरिमा और आचार की मधुरिमा से आपका व्यक्तित्व जगमगा रहा है।

हमें गौरव है कि विद्वानों को सतत वात्सल्य प्रदान कर अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन शास्त्री परिषद् को अधिवेशन, अनेक संगोष्ठियों की प्रेरणादात्री विभूति संयम साधना के क्षेत्र में अभिनंदनीय व्यक्तित्व की धनी स्वस्ति भूषण माता जी के चरणों में बारंबार वंदामि।

गुरु आस्था ही परम सौभाग्य

प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शांतिसागर जी महाराज छाणी

विधान के संबंध में दो शब्द

आज जो भी दिगम्बर साधु संत भारत भूमि पर विचरण कर रहे हैं, जो भी तप संयम धारण कर रहे हैं, वे सभी तीन परम्पराओं से हैं प्रथम आचार्य श्री आदिसागर जी अंकलीकर (1866) द्वितीय चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी (दक्षिण) (1872) और प्रशम मूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर जी छाणी (उत्तर) (1888) में जन्म हुआ। तीनों आचार्यों ने धर्म की महती प्रभावना की। पर उत्तर भारत की भूमि को सर्वप्रथम प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी वालों ने पदरज से पवित्र किया था। उत्तर भारत में कई शताब्दियों के पश्चात् किसी आचार्य के चरण पड़े थे।

बागड़ प्रांत का अति पिछड़ा छोटा गांव जहां मिट्टी के मकानों में घास फूंस के छप्पर थे, इसलिए छाणी ग्राम कहलाया। इसी ग्राम में श्री भागचंद जी अपनी पत्नी माणिकबाई अपनी दो पुत्रियों के साथ अल्प साधनों में भी संतोष से रहते थे। छोटी सी दुकान में घर की गाड़ी हंसी खुशी से चल रही थी। कार्तिक कृष्ण एकादशी 1645 ई. 31 अक्टूबर 1888 में एकलौते पुत्र केवलदास का जन्म हुआ। बचपन से ही मंदिर जाना, स्वाध्याय करना एवं जीवो पर दया करना इनका स्वभाव था। माता-पिता ने शादी के लिए बहुत जिद की पर नेमिनाथ पुराण में नेमिनाथ के वैराग्य का वर्णन पढ़कर आपका वैराग्य जाग्रत हो गया। केसरिया जी अतिशय क्षेत्र के दर्शन कर आपने ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया। वहां से लौटकर घर में मन नहीं लगा तो आप सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र वंदना को गऐ। वहां भगवान पार्श्वनाथ जी कि टोंक पर सातवीं ब्रह्मचर्य प्रतिमा ली एवं रंगीन वस्त्रों का त्याग कर सफेद धोती दुपट्टा धारण किये। छाणी वापस आऐ पर घर में नहीं रहे। मंदिर में रहते थे और फिर समाज में रहना प्रारम्भ कर दिया।

सम्मेदशिखर की वंदना करके, सात प्रतिमाओं को धारण कर, ग्रह त्याग कर, ब्रह्मचारी बनकर जगह जगह जाकर, समाज का अनुभव प्राप्त करके, स्वप्रेरणा से भगवान के समक्ष पहले गढ़ी में (ई. सन् 1922) क्षुल्लक दीक्षा ली। इसके पश्चात् सागवाड़ा वर्षायोग में अनन्त चतुर्दशी के दिन 1923 में श्री आदिनाथ भगवान के समक्ष मुनि दीक्षा धारण करके मुनि श्री शांतिसागर जी महाराज नाम से विख्यात हुए। ई. सन् 1926 श्री सम्मेदशिखर के पास गिरिडीह में आचार्य पद से विभूषित हुए। इन्होंने तप, त्याग, संयम को ज्यादा महत्व दिया था। अनेक जगह उपसर्ग आये पर तप त्याग के कारण सब नतमस्तक हो गये। और आचार्य श्री ने सबको क्षमा कर दिया। इन्होंने 22 वर्षायोग किये और 1944 में ही जीवन के उच्च लक्ष्य समाधि यम संलेखना को प्राप्त किया।

इनके प्रथम पट्टाचार्य श्री सूर्यसागर जी महाराज भी बहुत तपस्वी थे, उत्तर भारत में बहुत प्रभावना की, इन्होंने 33 ग्रंथों की रचना की। द्वितीय पट्टाचार्य श्री विजय सागर जी महाराज जिन्हे वचन सिद्धि प्राप्त थी, तृतीय पट्टाचार्य श्री विमलसागर जी महाराज, चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमति सागर जी महाराज तपस्वी जिन्होने 32 वर्षों तक वर्ष के तीनों सोलहकारण के उपवास किये एवं अनेक व्रत किये। पंचम पट्टाचार्य श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर जी महाराज जिन्होने त्रिलोकतीर्थ जैसे क्षेत्र का निर्माण किया एवं जिन्होने सिंहरथ चलाकर अपूर्व प्रभावना की। षष्ठ पट्टाचार्य श्री ज्ञानसागर जी जिन्होने भूले बिसरे सराको को श्रावक जैन बनाया। दीक्षा गुरु आचार्य श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर जी एवं गणिनी पद प्रदाता गुरु सराकोद्धारक आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज की शिष्या परम विदुषी लेखिका, गणिनी आर्यिका रत्न श्री स्वस्तिभूषण माता जी के कारुण्य भावों से निसृत जगतोद्धारक वाणी ने जन-जन का उद्धार किया है। गुरुओं के उपकार को पूरा करने और उनकी ज्ञान परम्परा को आगे बढ़ाने हेतु आर्यिका स्वस्ति भूषण माता जी दृढ़ संकल्पित हैं। आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज ने 2020 के पंचकल्याणक के अवसर पर गुरु दक्षिणा देने का बोला माता जी ने कहा हमें क्या करना है, तब उन्होंने कहा ''प्रशम मूर्ति आचार्य शांतिसागर जी छाणी महाराज के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान देना है।'' माता जी ने गुरु चरणों में संकल्प लिया और ''कहा आपकी आज्ञा ही हमारा सौभाग्य

है।'' पर क्या करें आचार्य श्री ज्ञानसागर जी के अनायास वियोग से उनके पूरे कार्यों का भार माता जी के कंधों पर आ गया। माता जी का अदम्यसाहस है जिन्होंने जहाजपुर अतिशय क्षेत्र स्वस्तिधाम की ख्याति को विश्वपटल पर अग्रणीय कर दिया। माता जी के चरण जहां-जहां पड़ते हैं वहां कुछ नया इतिहास जुड़ता चला जाता है।

एक दिन माता जी चिंतन में डूबी थी तभी अनायास विचार कौंधा कि गुरुवर के ऋण को पूरा करना है। प्रशममूर्ति आचार्य शांतिसागर जी छाणी जी ने 1926 में सिद्धभूमि सम्मेदशिखर के निकट गिरिडीह में आचार्य पद ग्रहण किया था, क्यों न उनका आचार्य पदारोहण शताब्दी समारोह अखिल भारतीय स्तर पर मनाया जाये। कमेटी से बात की, सभी लोगों ने उत्साहित होकर कहा आपका आदेश ही हम सब लोगों की संजीवनी है। आपके आदेश को मूर्तरूप देना ही तो हम लोगों का सौभाग्य है। आपका चिंतन जिस दिशा में जाता है आशा से कही अधिक सफलता मिलती है, इस संदर्भ में विशाल मीटिंग आयोजित करने के लिए समय निश्चित हुआ। और देश के प्रमुख श्रेष्ठी गण पधारे उन्होंने विभिन्न प्रकार के सुझाव दिये। उनको मूर्तरूप प्रदान करने हेतु कार्य चल रहा है। अपने अपने कार्य को लोग आगे बढ़ा रहे हैं।

इस प्रकार गुरु अभ्यर्थना के लिए कहीं से एक सुझाव प्रेरित हुआ। हमने माता जी के समक्ष वह विचार प्रेषित किया कि प्रशम मूर्ति आचार्य श्री शांतिसगर जी छाणी वालों की पूजन एवं विधान लिखा जाये, जिससे गुरु चरण शरण में आकर लोग कुछ पुण्य मोती एकत्रित कर सकें। माता जी ने कागज कलम उठाई और कहा शुभकार्य में देरी क्यों सुबह आना विधान तैयार मिलेगा। सुबह जब मैं माता जी के समक्ष आया। तो माता जी बोली यह है छाणी वालों का विधान। हमने सुरताल में विधान का गायन किया तो मेरा रोम रोम पुलकित हो उठा। पांडुलिपि को देखा तो बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसमें कहीं काट छांट नहीं। लगा कि इन्हें सरस्वती का वरदान है। जब माता जी भक्ति के सागर में डूब जाती हैं तो उनका चिंतन छन्द के रूप अवतरित होता जाता है।

आर्यिका माता जी तो व्युत्पन्न मति हैं उन्होंने शब्दों के पुष्पों को अलंकारों के पराग में भिगों कर छन्दों की माला में पिरोकर हम सभी को

पुण्य की सुगंध में बैठने का अजस्र वर प्रदान किया है।

आचार्य शांतिसागर जी छाणी महाराज का जीवन खुली किताब के समान सहज सरल था। नाम ख्याति से अति दूर रहे, लोभ लालच छल प्रपंच की काली छाया से पृथक रहकर, हमेशा साधना तप त्याग के उच्च शिखर पर चढ़ते रहे। उन्हें इन्द्रियां गुलाम नहीं बना पाई, उन्होंने इन्द्रियों को ही गुलाम बना लिया था। उन्होंने शारीरिक सुख/सुविधा को छोड़ आत्मा सुख की खोज की। उन्होंने जिनवचनों को भले ही सुना और पढ़ा पर उस पर मनन/चिंतन/मंथन बहुत ज्यादा किया उससे भी ज्यादा उसे आचरण में ढ़ालते चले गये। उन्होंने अपने जीवन को अकंप श्रद्धा की भूमि पर संकल्प/संयम/तप की छेनी से तराश कर मूर्तरूप प्रदान किया है। उन्होंने खुदका नूतन पथ बनाया जो आज राजमार्ग बनकर हजारों साधकों के काम आ रहा है जिस समय मुनि बनने का विचार किसी के स्वप्न में भी नहीं झांकता था। उस समय उन्होंने दिगम्बर मुद्राधारण कर पूरे समाज को आश्चर्य में डाल दिया। समाज के कल्याण हेतु पाखंड कुरीतियों को जड़ से मिटाने का सत् कर्म किया। लोगों ने पुण्यात्मा के वचनों को यू ही नहीं जाने दिया उसे धारण भी किया। समाज मानों गहरी नींद से उठ खड़ी हुई। सारा उत्तर भारत धर्म के प्रकाश से आलौकित हो उठा। बागड़ प्रांत तो रूढ़ियों के पास में जकड़ा था कहीं रास्ता नहीं दिख रहा था, छाणी गुरु गुरूण बनकर आये, उन्होंने मिथ्यानाग को निकाल फेंका। और हम सब को सन्मार्ग की छांव में बैठने का मौका दिया।

ऐसे प्रशम मूर्ति शांति सागर छाणी जी महाराज की अभ्यर्थना में रचित पूजन एवं मण्डल विधान की लघु पुस्तिका से गुरू के चरणों के साथ आचरण का भी स्पर्श करें। और पुण्य वृक्ष के मधुर फलों का रस स्वादन करें।

–बा. ब्र. मनीष भैय्या 'ज्ञान'

आचार्य छत्तीसी विधान प्रारम्भ
प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर जी (छाणी)

स्थापना

शंभू छंद (तर्ज-भला किसी का कर...)

शांतिसागर करुणासिंधु, वैराग्य भाव से भरे हुए।
रत्नत्रय पावन गंगा में, स्नान किया और शुद्ध हुए।।
हे श्रेष्ठ मुनि हे ज्येष्ठ मुनि, भक्ति के भावों से आया।
आओ–आओ मम हृदय बसो, स्थापन करने मन लाया।।

ॐ ह्रूँ प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हाननं

ॐ ह्रूँ प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं

ॐ ह्रूँ प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरण

जल बहता रहे तो शुद्ध रहे, इक जगह रहे तो सड़ जाता।
इक जगह रहे यदि मानव तो, वह मोह भाव से भर जाता।।
आचार्य शांतिसागर जी ने, दीक्षा ले निर्मल भाव किये।
औ कर विहार चहुं दिश जाकर, पूजा से मम हर्षाय जिये।।

ॐ ह्रूँ प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

घर में रह कर शांति न मिली, दर्शन को गये सम्मेद शिखर।
व्रत ब्रह्मचर्य का ले अखंड, छोड़ी जग की सब चिंता फिकर।।
चंदन सी शीतलता पाई, शीतलता पाने हम आये।
श्री शांतिसागर छाणी गुरु, व्रत चंदन ले चरणो आये।।

ॐ ह्रूँ प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव संसार ताप विनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा।

अक्षय सुखधारी भगवन के, भावों से दर्श किये तुमने।
अक्षय सुख की तब प्यास जगी, चल पड़े आत्मा से मिलने।।
श्री शांति सागर छाणी गुरु, अक्षयपुर की हमें राह मिले।
अक्षत लेकर पूजा करते, जिससे मम ज्ञान उद्यान खिले।।

ॐ ह्रूँ प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि. स्वाहा।

श्री नेमिनाथ चारित्र पढ़ा, लौटी बरात बिन ब्याह किये।
राजुल तज दीक्षा ले ली थी, पढ़ आपको तब वैराग्य हुआ।।
श्री शांतिसागर छाणी गुरु, भोगो को तज ले ली दीक्षा।
ले पुष्प तुम्हें पूजा हमने, छूटे जग ये मेरी इच्छा।।

ॐ ह्रूँ प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

भोजन है जीवनयापन को, व्रत संयम नियम लिये तुमने।
चर्या निर्दोष का पालन कर, कर्मों के दोष हरे तुमने।।
श्री शांति सागर छाणी गुरु, नैवेद्य से तुमको पूज रहे।
व्रत संयम पालन करने को, आशीष आपसे मांग रहे।।

ॐ ह्रूँ प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव क्षुधा रोग विनाशनाय नैवैद्यं नि. स्वाहा।

जब कर्म की आँधी चलती है, तब ज्ञान दीप बुझ जाता है।
पर आप धर्म की आंधी बन, कर्मों को निपटा आता है।।
श्री शांति सागर छाणी गुरु, वैराग्य दीप मम प्रजलाओ।
दीपक लेकर हम पूज रहे, उजियाला हृदय जगा जाओ।।

ॐ ह्रूँ प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव मोह अंधकार विनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

कर्मों के वश में होकर के, जग में सब लोग जिया करते।
कर्मों को अपने वश में कर, गुरु आतम ध्यान किया करते।।
श्री शांति सागर छाणी गुरु, कर्मों की वेदना दूर करो।
ले धूप आपको पूज रहे, कर्मों के बादल आप हरो।।

ॐ ह्रूँ प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव अष्ट कर्म दहनाय धूपं नि. स्वाहा।

जग के रसदार सरस फल भी, गुरु आपको जरा ना लुभा सके।
मुक्ति फल की चाहत तुमको, कुछ और न इसके सिवा दिखे।।
श्री शांतिसागर छाणी गुरु, फल से चरणों की पूजा करूँ।
मिथ्यात्व हटे सम्यकत्व मिले, भवभ्रमण व्याधि को शीघ्र हरूँ।।

ॐ ह्रूँ प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि. स्वाहा।

सम्राट बनूँ निज आतम का, मैं पराधीन सुख ना चाहूँ ।
स्वाधीन सरस संन्यासी बन, होकर स्वतंत्र निज रस चाखूँ।।
ऐसे भावो ने जग छुड़वा, निर्ग्रंथ बना निज पद पाया।
श्री शांतिसागर छाणी गुरु, मैं अर्घ्य चढ़ाने हूँ आया।।

ॐ ह्रूँ प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आचार्य परमेष्ठी अर्घ्यावली

चाल छंद (तर्ज–ऐ मेरे वतन के...)

उपवास सहज ही करते, तप करने से ना डरते।
आचार्य की महिमा गाऊं, तप शक्ति पाने आऊँ।।
उत्तम तपधारी गुरुवर, छाणी के शांतिसागर।
जग का उद्धार किया है, हमें मुक्ति मार्ग दिया।।

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री अनशन तप गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वे भूख से कम ही खावे, ऊनोदर तप को पावे।
मन होता शांति का सागर, भरते निज धर्म की गागर।।
उत्तम तपधारी गुरुवर, छाणी के शांतिसागर।
जग का उद्धार किया है, हमें मुक्ति मार्ग दिया।।

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री ऊनोदर तप गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

विधि लेकर करते चर्या, समिति पालते ईर्या।
यह नियम निभाते पूरा, नहि कोई काम अधूरा।।
उत्तम तपधारी...

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री व्रत परिसंख्यान तप गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

थे विनय महागुणधारी, तज द्वेष ईर्ष्या भारी।
फल लगे हुये ज्यों तरुवर, ऐसे थे हमारे गुरुवर।।
उत्तम तपधारी...

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री विनय तप गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इक इक रस प्रतिदिन त्यागा, आतम रस में मन लागा।
धर ध्यान धरम रस पीते, इंद्रिय सुख को हैं जीते।।
उत्तम तपधारी...

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री रस परित्याग गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आसन की सिद्धि कीनी, और ध्यान में दृष्टि दीनी।
तन को मन से है साधा, फिर आई न कोई बाधा।।
उत्तम तपधारी...

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री विविक्त शैय्यासन तप गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

काया का दुख जब आया, मन शांत तुरत करवाया।
बाइस परीषह को सहते, समता स्वभाव में रहते।।
उत्तम तपधारी...

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री कायक्लेश तप गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भूलो को वे स्वीकारें, प्रायश्चित्त ले के सुधारे।
गुण निधि से भर गया जीवन, और आतम हो गई पावन।।
उत्तम तपधारी...

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री प्रायश्चित तप गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तपसी की करते सेवा, आतम पाये गुण मेवा।
दुखियों के दुःख निवारे, शिष्यों के बने सहारे।।
उत्तम तपधारी...

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री वैय्यावृत्ति तप गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वे ज्ञान पिपासु इतने, सागर में मोती जितने।
स्वाध्याय में रत हैं रहते, चर्चा भी धर्म की करते।।
उत्तम तपधारी...

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री स्वाध्याय तप गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

काया का मोह तजा है, बस आतमराम भजा।
काया है धर्म का साधन, होता आतम आराधन।।
उत्तम तपधारी...

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री कायोत्सर्ग तप गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मन वचन काय को साधा, किया ध्यान नहि कोई बाधा।
ध्यानी कर्मों को हरता, संवाद स्वयं से करता है।।
उत्तम तपधारी गुरुवर, छाणी के शांतिसागर।
जग का उद्धार किया है, हमें मुक्ति मार्ग दिया।।

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री ध्यान तपगुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

10 धर्म धारी गुरुवर

छंद - शेर चाल
(तर्ज-दे दी हमे आजादी...)

मन को किया है शांत क्रोध पास न आया।
धर करके क्षमा भाव, निज गुण को बढ़ाया।।
दश धर्म ध्वजा आपने, इस जग में फहराई।
हे प्रशम मूर्ति धर्ममूर्ति, हमने है पाई।।

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री उत्तम क्षमा धर्म गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

यश कीर्ति ने चहुँ ओर से, गुणगान किया था।
मार्दव धरम के धारी, ना अभिमान किया था।।
दश धर्म....

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री उत्तम मार्दव धर्म गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

माया भी रही तुमसे दूर, सरल भाव था।
आर्जव धरम को धार, सरल ही स्वभाव था।।
दश धर्म...

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री उत्तम आर्जव धर्म गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जग के पदार्थ आपको, लुभा नहीं सके।
उत्तम धरम था शौच, वीतरागता दिखे।।
दश धर्म ध्वजा आपने, इस जग में फहराई।
हे प्रशम मूर्ति धर्ममूर्ति, हमने है पाई।।

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री उत्तम शौच धर्म गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सत्य धर्म सूर्य बन के, किया उजाला।
भागा असत्य छिपा कही, कर्म का जाला।।
दश धर्म...

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री उत्तम सत्य धर्म गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इंद्रिय को किया वश में, करी जीवों की रक्षा।
मन से वचन से काय से, छोड़ी सभी इच्छा।।
दश धर्म...

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री उत्तम संयम धर्म गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तप रूपी अग्नि में, करम का होम कर दिया।
कठोर कर्म बंध को भी, मोम कर दिया।।
दश धर्म...

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री उत्तम तप धर्म गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिन देव के समक्ष जग का, त्याग कर दिया।
जिन देव जैसे बनने का, संकल्प ले लिया।।
दश धर्म...

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री उत्तम त्याग धर्म गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आतम के सिवा आपने, कुछ अपना न माना।
घर द्वार तजा पहन लिया धर्म का बाना।।
दश धर्म ध्वजा आपने, इस जग में फहराई।
हे प्रशम मूर्ति धर्ममूर्ति, हमने है पाई।।

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री उत्तम आकिंचन धर्म गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वे कामना औ वासना से, दूर हो गये।
सम्मेद शिखर जाके ब्रह्मचारी हो गये।।
दश धर्म...

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पंचाचार अर्घ्यावली

चाल छंद
(तर्ज-ऐ मेरे वतन के लोगो...)

सम्यक् दर्शन को पाया, आचरण साथ में आया।
दर्शन आचार के धारी, गुरु रक्षा करें हमारी।।
आदर्श चरित्र के नायक, शांति सागर सुखदायक।
हम पूजा करे तिहारी, स्वीकार हो धोक हमारी।।

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री दर्शनाचार गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कर में ले ज्ञान का दीपक, हो मुक्ति मार्ग प्रकाशक।
कर दिया था दूर अँधेरा, सुख का हो गया सबेरा।।
आदर्श...

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री ज्ञानाचार गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ले शुद्ध चरित्र का चंदन, महकाया भारत उपवन।
तुम मर्यादा के सागर, ज्ञानी ने पूजा आकर।।
आदर्श चरित्र के नायक, शांति सागर सुखदायक।
हम पूजा करे तिहारी, स्वीकार हो धोक हमारी।।

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री चरित्राचार गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तप से सूरज सम दमके, चंदा सम चम-चम चमके।
तप का सागर लहराया, हीरा मोती को पाया।।
आदर्श...

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री तपाचार गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आतम शक्ति का खजाना, शक्ति से शक्ति बढ़ाना।
आतम का बल प्रगटाया, न जरा कहीं डिग पाया।।
आदर्श...

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री वीर्याचार गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

षट् आवश्यक अर्घ्यावली

छंद - भुजंग प्रयात
(तर्ज-नरेन्द्रं फणीन्द्रं...)

जीवों की रक्षा का भाव बनाया।
नहि पृथ्वी काय को उनने सताया।।
यशस्वी तपस्वी मनस्वी थे गुरुवर।
करें वांछा पूरी, थे भक्तों के तरुवर।।

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री पृथ्वीकायिक जीव रक्षा गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जल काय जीवों की करते थे रक्षा।
भक्तों को रक्षा की देते थे शिक्षा।।
यशस्वी तपस्वी मनस्वी थे गुरुवर।
करें वांछा पूरी, थे भक्तों के तरुवर।।

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री जलकायिक जीव रक्षा गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

न अग्नि जलाते, न अग्नि बुझाते।
वे अग्नि के जीवों को, दुख से बचाते।।
यशस्वी तपस्वी मनस्वी थे गुरुवर।
करें वांछा पूरी, थे भक्तों के तरुवर।।

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री अग्निकायिक जीव रक्षा गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वायु की आयु को ना आप हरते।
उत्तम अहिंसक वे होकर विचरते।।
यशस्वी तपस्वी मनस्वी...

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री वायुकायिक जीव रक्षा गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हरित काय जीवों को, ना कष्ट देते।
णमोकार जप और चिंतन में रहते।।
यशस्वी तपस्वी मनस्वी...

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री वनस्पतिकायिक जीव रक्षा गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मच्छर हो चींटी, या खटमल की काया।
बड़ी सावधानी से त्रस को बचाया।।
यशस्वी तपस्वी मनस्वी...

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री त्रसकायिक जीव रक्षा गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तीन गुप्ति अर्घ्य

चौपाई

चिंतन मनन स्वाध्याय के द्वारा, स्वच्छ साफ किया मन का द्वारा।
इसीलिये हो शांति सागर, भर दो कुछ मेरी भी गागर।।

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री मन गुप्ति गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हित मित प्रिय वाणी को बोलते, जैन धर्म के राज खोलते।
धर्म ज्ञान का अमृत बांटा, कर्म मेघ के दुख को छांटा।।

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री वचन गुप्ति गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तप से काया को भी साधा, भोग न मांगे न कोई बाधा।
निर्विकार थी जीवन चर्या, शुद्ध हो गई सारी क्रिया।।

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री काय गुप्ति गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरुदेव नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

दोहा

धर्म ध्वजा ले हाथ में, चले अकेले वीर।
केवल पाने केवल दास, मन में हुये अधीर।।
तीन लोक के नाथ के, साक्षी दीक्षा पाय।
गुणमाला जयमाल ले, उनको शीश झुकाये।।1।।

शेर चाल

(तर्ज - दे दी हमें आजादी...)

मोक्ष मार्ग के पथिक की ये कहानी है।
देखा है लाखों लोगों ने, उनकी जुबानी है।।
चारित्र के नायक बने, और ज्ञानवान थे।
निर्भय निडर थे सिंह वृत्ति, वे महान थे।।2।।

भारत में राजस्थान है प्रदेश सुहाना।
बागड़ में ग्राम छाणी का था, जगत दीवाना।।
श्री भागचन्द जी का भाग्य, आप जगाये।
मातु श्री माणिक थी जिनसे, जन्म है पाये।।3।।

छाणी बजी बधाई गीत, सखियां हैं गायें।
सुंदर सलौना मुखड़ा लख के, हर्ष मनायें।।
बचपन से ही जिन धर्म रुचि, आप में रही।
होकर के युवा धर्म गंगा, आप में बही।।4।।

राजुल और नेमिनाथ का, चरित्र जब पढ़ा।
वैरागी हुये आप कदम, धर्म में बढ़ा।।
सम्मेद शिखर जाके, ब्रह्मचारी बन गये।
छाणी में आये आप किन्तु, घर में न रहे।।5।।

थे दीक्षा लेने भाव किन्तु, गुरु ना मिले।
श्री पार्श्वनाथ के समक्ष, प्रतिमा को लिये।।
थे साधना में लीन किन्तु त्याग प्रबल था।
लेने को मुनि दीक्षा भाव, और सबल था।।6।।

जैनी का नगर सागवाड़ा, भक्त थे महान।
गुरुदेव की सेवा करे औ करते थे गुणगान।।
भादो अनंत चतुर्दशी, बन गया इतिहास।
जिन देव सामने किया, संपूर्ण संग त्याग।।7।।

वीतरागी मुद्रा लख, सब धन्य हो गये।
गूँजे गगन में जय जय, निर्ग्रंथ हो गये।।
भक्तों ने प्रथम बार, मुनि दर्श को पाया।
विद्वान बुद्धिमान, जगत दर्श को आया।।8।।

पिच्छी औ कमंडल को ले, करने लगे विहार।
जाते जहाँ उपदेश दें, औ देते संस्कार।।
चर्या कठोर पालते, उपसर्ग भी आये।
पर साधना के आगे सभी सर को झुकाये।।9।।

गुरुदेव ने कदम बढ़ाया, शिष्य आ गये।
सूर्य विजय विमल सुमति, जग में छा गये।।
कुथुं सागर निर्मल सागर दर्शन सागर थे।
सन्मति सागर ज्ञान सागर भी विशाल थे।।10।।

लंबी सूची शिष्यों की, चहुँ ओर से आये।
थे ज्ञानी ध्यानी तपसी, निज आत्म समाये।।
आशीष दिया आपने, त्यागी बने अनेक।
लेकर समाधि मरण से, जड़ चेतना में भेद।।11।।

सम्मेद शिखर वंदना के भाव जो हुये।
गिरीडीह हुआ चौमास भक्त चरण को छुये।।
चौमास में गिरीडीह में आचार्य पद मिला।
बढ़ने लगा था संघ, फूल धर्म का खिला।।12।।

इक्कीस वर्ष साधना, प्रभावना करी।
स्कूल पाठशाला, संस्कार नींव भरी।।
नारी को शील धर्म का भी, ज्ञान कराया।
जो थी समाज की बुराई, उसको हटाया।।13।।

बागड़ का सूर्य सागवाड़ा शहर में आया।
लेकर के समाधि वहां पे, ध्यान लगाया।।
आगे परम्परा चली जो, आज भी चलती।
जो साधना आराधना के, फूल सी खिलती।।14।।

शांति सिन्धु शांति में थे, हो गये विलीन।
आगे के मोक्ष यात्रा में, जा बजाई बीन।।
इस वीर को हर सांस में, हम याद करेंगे।
लेकर के इनका नाम, भव सिन्धु तरेंगे।।15।।

दोहा

वृद्धि होवे धर्म की, मिले जीवन का ज्ञान।
'स्वस्ति' भक्ति कर रही, हो चरणों विश्राम।।

ॐ ह्रूँ अर्हं श्री छत्तीस गुण सहित प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी गुरूदेव नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

रत्नत्रय की मूर्ति का, किया है कुछ गुणगान
चरणो अर्घ्य चढ़ायके, बारंबार प्रणाम।

परिपुष्पाजलिं

चालीसा
श्री शांतिसागर छाणी महाराज

दोहा

मंगल गाथा गुरूवर की, करे अमंगल दूर।
महावीर उद्यान का, पुष्प हुआ मशहूर।।
पंच परम परमेष्ठी का करते है गुणगान।
शांतिसागर छाणी को, करते नित्य प्रणाम।।

जय-जय-जय श्री शांतिसागर, किया आपने धर्म उजागर।
धर्म ज्ञान के आप सरोवर, चारित्र फल के आप तरूवर।।
माणिक मां ने जन्म दिया है, भागचंद ने लाड़ किया है।
घर आंगन मे बजी बधाई, केवलदास की महिमा गाई।।
छाणी ग्राम की माटी पावन, केवलदास बने है सावन।
धर्म अहिंसा को बतलाया, करूणा दया का पाठ पढ़ाया।।
नेमिनाथ चारित्र पढ़ा था, तब वैराग्य का दीप जला था।
तीर्थंकर को गुरू बनाया, ब्रह्मचर्य व्रत को अपनाया।।
वीतरागता का आकर्षण, जब करते थे प्रभु के दर्शन।
ग्यारह प्रतिमा व्रत को धारा, णमोकार का मंत्र उचारा।।
बैठे आदि प्रभु जी की शरणा, बोले तुम जैसा है बनना।
सर्व परिग्रह छोड़ दिया था, मुनिव्रत अंगीकार किया था।।
सबने किये गुरू के दर्शन, गुरू ने किये आत्म के दर्शन।
सागवाड़ा में छोटी पहाड़ी, जहां रहे है जंगल झाड़ी।।
जाकर वहां पे ध्यान लगाया, चिंतन मनन का दीप जलाया।
स्वयं शिष्य खुद गुरू बने है, पूरब के संस्कार घने है।।
मुनि चर्या निर्दोष पालते, सर्व दोषो को आप टालते।
जिनवाणी का अध्ययन करते, जो पढ़ते वैसा ही करते।।

पुण्यशाली है बागड़वासी, मिले उन्हें गुरू जी विश्वासी।
गुरू सेवा में तत्पर रहते, जो गुरू कहते वो ही करते।।
कर विहार इंदौर में आये, सूर्य सागर को शिष्य बनाये।
धीरे-धीरे संघ बढ़ा था, धर्म ज्ञान का रंग चढ़ा था।।
श्री सम्मेद शिखर का वंदन, पहुँचे वीरा के लघु नंदन।
चौमासा गिरीडीह किया था, आचार्य पद वहां मिला था।।
नगर शहर गांव में जाते, पाठशाल स्कूल खुलाते।
भक्तों को उपदेश सुनाते, बात अहिंसा की बतलाते।।
किये अनेक तीर्थ के दर्शन, पावन प्रभु चरण स्पर्शन।
चारित्र चक्री शांतिसागर, छाणी वाले शांति सागर।।
ब्यावर संग चौमासा हुआ था, भक्तों ने इतिहास रचा था।
प्रेम पूर्ण वात्सल्य की गंगा, पावन तन मन हुआ था चंगा।।
इस युग के हो चारित्र नायक, भक्तों के भी हो सुखदायक।
व्रत उपवास की झड़ी लगा दी, संयम तप की ज्योत जगा दी।।
छाणी परम्परा चली आ रही है, ज्ञान की धारा बही जा रही।
सूर्य, विजय, विमल के सागर, सुमति सन्मति ज्ञान खुला दर।।
ज्ञेय सागर जी है महा तपसी, प्रभो नाम के हरपल जपसी।
शिष्य सभी जिनवाणी ध्याये, प्रभु नाम का ध्वज फहराये।।
ज्ञान ध्यान तप लीन है रहते, जब बोले जिनवाणी कहते।
सम्यक अनुभव ज्ञान के धारी, गुरूवर रक्षा करें हमारी।।
गुरूवर भक्ति करेंगे तेरी, जब तक तन में सांस है मेरी।
हर पल नाम जपूंगा तेरा, दुःख संकट मेटो जग फेरा।।
'स्वस्ति' भक्ति कर हर्षाये, गुरू चरणों में शीश झुकाये

चालीस दिन तक चालीस बार, पढ़ेगे जो भवि मान।
कष्ट मिटे और सुख मिले, मिले ज्ञान सम्मान।।
शांतिसागर गुरू चरण, करेंगे भव से पार।
भक्ति भाव से पूजूं मैं, होवेगा उद्धार।।

आरती
श्री शांतिसागर छाणी महाराज

छाणी के शांतिसागर, कीना है धर्म उजागर।
हम सब उतारे तेरी आरती,
ओ गुरूवर हम सब उतारे...

भागचंद पिता माणिक मां को, धन्य आपने कीना।
स्वयं तिरे सबको भी तारा, जन्म है ऐसा लीना।। गुरूवर...
धरती को धन्य किया है, छाणी में जन्म लिया है।
हम सब उतारे तेरी आरती...

नेमीनाथ चारित्र को पढ़, वैराग्य आपको आया।
केसरिया जा ब्रह्मचर्य ले, त्याग धर्म अपनाया।। गुरूवर...
नंदीश्वर व्रत को धारा, आतम का रूप संवारा।
हम सब उतारे तेरी आरती...

श्री सम्मेद शिखर में जाकर, सप्तम प्रतिमा धारी।
क्षुल्लक दीक्षा गढ़ी में लेकर, कर ली मोक्ष की तैयारी।। गुरूवर...
बन गये गुरू गृह के त्यागी, आतम से लगन है लागी।
हम सब उतारे तेरी आरती...

राजस्थान की बागड़ भूमि, सागवाड़ा अति सोहे।
आदि के चरणा मुनिव्रत लीना, गुरू दर्शन मन मोहे।। गुरूवर...
होने लगे गुरू के दर्शन, मुनियों के चरण स्पर्शन ।
'स्वस्ति' गुरू भक्ति गाये, गाकर के मन हर्षाये।
हम सब उतारे तेरी आरती...

भारत गौरव स्वस्ति धाम प्रणेत्री
गणिनी आर्यिका 105 श्री स्वस्तिभूषण माता जी एवं
स्वस्ति धाम, जहाजपुर के
Official Social Media से जुड़ने हेतु
QR Code को Scan करें।

विनम्र निवेदन

परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव, गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माताजी द्वारा रचित 'श्री जिनपद पूजांजलि' (नवीन जिनवाणी संग्रह) एक बहुचर्चित कृति है जिसको पूज्य माताश्री ने सरल व सरस शैली में रचकर सकल जैन समाज पर बड़ा उपकार किया है। यह कृति पूज्य माताश्री के ज्ञान की सुरभि चारों दिशाओं में फैला रही हैं। आप किसी भी अवसर पर इस कृति को वितरित कर शास्त्र दान का लाभ ले सकते हैं। प्रचार-प्रसार हेतु सम्पर्क करें श्री स्वस्ति साहित्य प्रकाशन समिति